1. पूंजीवादी नियोजन (Capitalistic Planning)

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत जो आर्थिक नियोजन किया जाता है उसे पूंजीवादी नियोजन कहते हैं। इसमें पूंजीवादी ढाँचे को स्थिर रखते हुए मूल्य नीति, मौद्रिक नीति, तटकर व प्रशुल्क नीति, विनियोग नीति, आदि में परिवर्तन किये जाते हैं, लेकिन उपभोग की स्वतन्त्रता रहती है। राज्य द्वारा हस्तक्षेप उस सीमा तक ही किया जाता है जिससे निजी साहस सुदृढ़ होता हो। उपभोक्ताओं की माँग, पूर्ति व लाभ को ध्यान में रखकर उत्पादन व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन किये जाते हैं। इसमें राज्य साहसी का कार्य स्वयं नहीं करता है, बल्कि निजी साहस को आवश्यक सहायता प्रदान कर उसे विकास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उपभोक्ताओं को आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक स्वतन्त्रता रहती है।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों में इस नियोजन का उपयोग प्रायः आकस्मिक संकटों; जैसे युद्ध, विश्वव्यापी मन्दी, आदि से बचने के लिए किया जाता है। संयुक्त राज्य अमरीका ने सन् 1930 में विश्वव्यापी मन्दी को दूर करने के लिए नियोजन का सहारा लिया था।

पूंजीवादी नियोजन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—(i) सुधारवादी नियोजन (Corrective Planning), (ii) विकासात्मक नियोजन (Developmental Planning)।

(i) **सुधारवादी नियोजन** से अर्थ ऐसे नियोजन से है जो देश की अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए किया जाता है। जैसे संयुक्त राज्य अमरीका ने 1946 में रोजगार अधिनियम (Employment Act) बनाया। इस अधिनियम का उद्देश्य अर्थव्यवस्था की अवनत प्रवृत्ति (Recessionary Trend) को रोकना था। यह अधिनियम आज भी लागू है। इस अधिनियम का उद्देश्य मन्दी व तेजी के मध्य के मार्ग का नियोजन है। इस अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने के लिए अमरीकी सरकार ने एक विशेष विभाग बना रखा है। जैसे ही उच्चावचन होते हैं यह विभाग उचित कार्यवाही प्रारम्भ कर देता है।

(ii) **विकासात्मक नियोजन** से अर्थ ऐसे नियोजन से है जो देश के विकास के लिए किया जाता है। यह भी दो प्रकार का होता है—(अ) क्षेत्रीय नियोजन (Regional Planning) व (ब) सम्पूर्ण नियोजन (Overall Planning)।

(अ) क्षेत्रीय नियोजन किसी विशेष क्षेत्र के लिए ही होता है, जैसे उद्योग। फ्रांस ने इस प्रकार का नियोजन मोनेट योजना (Monnet Plan) के अन्तर्गत किया गया था जिसका उद्देश्य औद्योगिक सामग्री के नवीनीकरण से था। इसी प्रकार अर्जेण्टाइना ने भी जनसंख्या वृद्धि की एक योजना बनायी थी।

(ब) सम्पूर्ण नियोजन से अर्थ ऐसे नियोजन से है जिसमें देश की अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण क्षेत्रों के विकास के लिए नियोजन किया जाता है। इसमें योजनाएँ तो राज्य बनाता है, लेकिन उनका क्रियान्वयन विभिन्न क्षेत्रों को सौंप दिया जाता है। इस प्रकार का नियोजन ब्रिटेन की श्रमिक सरकार ने 1945 व 1951 के मध्य किया था। भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) को इस प्रकार की योजना कहा जा सकता है।

पूंजीवादी नियोजन के लक्षण—उपर्युक्त विवरण के आधार पर पूंजीवादी नियोजन में यह लक्षण पाये जाते हैं : (1) **विशेष परिस्थितियों में हस्तक्षेप**—इसमें राज्य द्वारा हस्तक्षेप केवल विशेष परिस्थितियों में आंशिक रूप में ही किया जाता है; जैसे युद्ध, मन्दी, आदि। (2) **उपभोक्ता सार्वभौमिकता**—इसमें उपभोक्ता की सार्वभौमिकता बनी रहती है और उत्पादन उपभोक्ता की इच्छा के अनुरूप ही होता है। (3) **विपणि नियन्त्रण**—इसमें बाजार या विपणि पर नियन्त्रण रख कर नियोजन किया जाता है। (4) **आंशिक नियोजन**—पूंजीवादी नियोजन में सरकार का हस्तक्षेप आंशिक रूप में ही होता है।

Scanned with CamScanner

3. समाजवादी नियोजन (Socialistic Planning)

समाजवादी नियोजन से अर्थ ऐसी व्यवस्था से है जिसमें उत्पादन के भौतिक साधन किसी सार्वजनिक शक्ति या ऐच्छिक संघ द्वारा संचालित एवं नियन्त्रित किये जाते हैं। इसमें निजी क्षेत्र को सीमित कर दिया जाता है तथा उत्पादन साधनों पर समाज व सरकार का नियन्त्रण रहता है। आधारभूत उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में होते हैं तथा नियोजन केन्द्रीय होता है। **इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक विषमताओं को दूर करना है।**

समाजवादी नियोजन, पूंजीवादी नियोजन व साम्यवादी नियोजन के बीच का रास्ता है। इसमें अर्थव्यवस्था पर न तो पूरे तौर पर सरकार का नियन्त्रण होता है और न निजी क्षेत्र का। इसमें न तो उत्पादन एवं वितरण पूर्ण स्वतन्त्र होता है और न पूर्ण नियमित। उत्पादन साधन व भूमि भी न तो पूर्ण रूप से सरकारी होती है और न निजी। इस समाजवादी नियोजन में सामाजिक हित सर्वोपरि रहता है। इसीलिए विपणन व उपभोक्ता पर नियन्त्रण रहते हैं।

समाजवादी नियोजन की शुरुआत में भारी उद्योगों पर अधिक पूंजी विनियोजित की जाती है तथा उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाया जाता है। उपभोग को नियमित करने के लिए राशनिंग व्यवस्था लागू की जाती है। उत्पादन की प्राथमिकताएँ एवं साधनों का बँटवारा केन्द्रीय होता है, लेकिन योजना को अन्तिम रूप देते समय सभी सम्बन्धित वर्गों की राय माँगी जाती है।

समाजवादी नियोजन में नियोजन का उत्तरदायित्व सरकार पर होता है जिसके लिए विभिन्न प्रकार के आँकड़े एवं सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। इन्हीं आँकड़ों व सूचनाओं के आधार पर ही प्राथमिकताएँ तथा लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं। इन योजनाओं की सफलता सरकारी प्रशासन की कुशलता, दक्षता व ईमानदारी पर निर्भर करती है।

Scanned with CamScanner

समाजवादी नियोजन के लक्षण—उपर्युक्त विवरण के आधार पर समाजवादी नियोजन में यह लक्षण या विशेषताएँ पायी जाती हैं : (1) **सामाजिक हित**—समाजवादी नियोजन में व्यक्तिगत हित व लाभ के स्थान पर सामाजिक हित को अधिक महत्व दिया जाता है जिसके कारण व्यक्ति को समाजहित में त्याग करने के लिए विवश किया जाता है। (2) **आर्थिक समानता**—समाजवादी नियोजन का अन्तिम लक्ष्य आर्थिक समानता लाना होता है। (3) **औद्योगीकरण को महत्व**—इसमें पूंजीगत व आधारभूत उद्योगों के विकास को अधिक महत्व दिया जाता है। (4) **वितरण पर नियन्त्रण**—राज्य द्वारा माँग-पूर्ति के नियम को स्वयं चलते रहने की छूट नहीं दी जाती है। इसीलिए उत्पादन, वितरण व विदेशी व्यापार पर नियन्त्रण लगा दिये जाते हैं। (5) **उपभोक्ता की स्वतन्त्रता पर नियन्त्रण**—समाजवादी नियोजन में उपभोक्ताओं की इच्छाओं के अनुरूप उत्पादन नहीं किया जाता है बल्कि उपभोक्ता के दीर्घकालीन कल्याण को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसीलिए उपभोक्ता की स्वतन्त्रता पर नियन्त्रण लगाये जाते हैं। (6) **प्रोत्साहन द्वारा नियोजन**—इस नियोजन में व्यक्तियों व संस्थाओं आदि को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे नियोजन में सहयोग दें। अतः दबाव डाल कर त्याग करने की नीति को मान्यता दी जाती है। (7) **नीचे के स्तर से नियोजन**—समाजवादी नियोजन के अन्तर्गत नागरिकों को राज्य के निर्माण में अपना मत रखने का अधिकार होता है। इस प्रकार समाजवादी नियोजन में योजनाएँ नागरिकों पर लादी नहीं जाती हैं। (8) **केन्द्रीय अर्थव्यवस्था**—समाजवादी नियोजन में केन्द्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना की जाती है जिसमें आर्थिक क्रियाएँ स्वयं राज्य द्वारा या प्रजातान्त्रिक संस्थाओं द्वारा संचालित की जाती हैं। व्यक्तिगत साहस नियन्त्रित कर दिया जाता है। (9) **उत्पादन साधन राज्य के अधिकार व नियन्त्रण में**—इसमें उत्पादन के साधन राज्य के अधिकार व नियन्त्रण में रहते हैं तथा राज्य द्वारा धीरे-धीरे विभिन्न आर्थिक क्रियाओं का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाता है जिससे सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार हो जाता है। (10) **नियोजन व समाजवाद का घनिष्ठ सम्बन्ध**—समाजवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक नियोजन का होना अनिवार्य है, क्योंकि बिना नियन्त्रण के समाज का हित करना सम्भव नहीं होता है।

Scanned with CamScanner